मंगलाचरण

आचार्य 108 श्री विद्यासागरजी के चरणों में सादर समर्पित

विद्यासागरजी के चरणों में, अपना शीश धरुं,
दिल ये कहता है कि, गुरुवर के लिये, गीत रचूं।
उनकी वाणी तो ये जिनवाणी के जैसी लगती है,
उनकी चर्या तो हमें अगाम के जैसी लगती है,
उनकी महिमा को सुनाकर, उनका गुणगान करुं।
उनके उपदेशों से जन जन को ज्ञान मिलता है,
उनके चरणों से भी जो आता मान मिलता है,
ऐसे गुरुवर के मैं चरणों का सदा दास रहूं।
मेरे गुरुवर की पड़ी जिन पर कृपा की दृष्टि,
ज्ञान के सागर की लहरों में उतर गई किश्ती,
ऐसे ज्ञानी की तपस्या को मैं प्रणाम करुं।
वे सभी अब तक हुए कुंदन जिनको दी दीक्षा,
मोक्ष के मार्ग में चलने की ऐसी दी शिक्षा,
मुक्ति का जो मार्ग दिखाएं मैं वो ही राह चलूं।
साथ छूटे न कभी उनसे ये तमन्ना है,
मौत भी आए तो गुरुवर का नाम जपना है,
जन्म मिल जाए दोबारा उनका दीदार करुं।
दिल ये कहता है कि गुरुवर के लिए गीत रचूं।।

– **निर्मल पंचरत्न**, डोंगरगढ़
महामंत्री
चंद्रगिरी ट्रस्ट समिति, डोंगरगढ़

मौत की हकीकत

सपने में अपनी मौत को करीब से देखा।
कफन में लिपटे जलते अपने शरीर को देखा।
खड़े थे लोग हाथ बांधे एक कतार में....
कुछ थे परेशान कुछ उदास थे।
पर कुछ छुपा रहे अपनी मुस्कान थे।
दूर खड़ा देख रहा था मैं ये सारा मंजर।
तभी किसी ने हाथ बढ़ाकर मेरा हाथ थाम लिया।
और जब देखा चेहरा उसका तो मैं बड़ा हैरान था।
हाथ थामने वाला कोई और नहीं, मेरा भगवान था।
चेहरे पर मुस्कान और नंगे पाँव था।
जब देखा मैंने उसकी तरफ, जिज्ञासा भरी नजरों से
तो हंसकर बोला....
तुने हर दिन दो घड़ी जपा मेरा नाम था।
आज प्यारे उसका कर्ज चुकाने आया हूँ।
रो दिया मैं अपनी बेवकूफियों पर तब ये सोचकर।
जिसको दो घड़ी जपा, वो बचाने आये है।
और जिन में हर घड़ी रमा रहा।
वो शमशान पहुँचाने आये है।
तभी खुली आँख मेरी बिस्तर पर विराजमान था।
कितना था नादान मैं, हकीकत से अन्जान था।

– **संजय जैन, मुंबई**

देने की आदत ?

एक संत ने एक द्वार पर दस्तक दी और आवाज लगाई, 'भिक्षाम् देहि।' एक छोटी बच्ची बाहर आई और बोली, 'बाबा, हम निर्धन हैं, हमारे पास देने को कुछ नहीं है।'

संत बोले, 'बेटी, मना मत कर, अपने आंगन की धूल ही दे दे। लड़की ने एक मुठ्ठी धूल उठाई और भिक्षा पात्र में डाल दी।

बाद में शिष्य ने पूछा, 'गुरुजी, धूल भी कोई भिक्षा है ? आपने धूल देने को क्यों कहा?'

संत बोले, 'बेटे, अगर वह आज न कह देती, तो फिर कभी नहीं दे पाती। आज धूल दी तो क्या हुआ, देने का संस्कार तो पड़ गया। आज धूल दी है, उसमें देने की भावना तो जागी, कल समर्थवान होगी तो फल फूल भी देगी।'

देना सीखें। पहले तुच्छ या कम महत्वपूर्ण वस्तुओं से शुरू करें। देने के आनंद और संतुष्टि को महसूस करें, फिर महत्वपूर्ण और मूल्यवान वस्तुएँ देने में भी खुशी महसूस करेंगे। – **डॉ. आरोही जैन**, भोपाल

आपके परिवार में संपन्न मांगलिक अवसर जैसे कि 25वीं या 50वीं विवाह वर्षगांठ या बच्चों के विवाह का शुभ अवसर हो या जन्मदिवस की सुहानी यादें इनका विज्ञापन 'गोलालारीय दर्शन' पत्रिका में प्रकाशित कर इस सुखद एहसास को समाजजनों के साथ सांझा कर सकते है। ऐसे अवसरों पर हम लाखों रुपये खर्च कर देते है, हमारा आपसे सादर अनुरोध है कि अपने समाज की एकमात्र पत्रिका में मांगलिक प्रसंगों का विज्ञापन प्रदान कर गोलालारीय दर्शन को आर्थिक संबल कर पत्रिका के नियमित प्रकाशन में अद्वितीय सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी छोटी सी सहायता राशि हमारे लिए अति महत्वपूर्ण है।

* विनम्र श्रद्धांजली *

* महेशकुमार जैन की माताजी **श्रीमती सुंदरबाई** धर्मपत्नी स्व. श्री मोंजीलाल जैन (बुढ़पुरावाले) का निधन 15 दिसम्बर 2015 को विदिशा में हो गया। आप अत्यंत धार्मिक एवं सरल स्वभावी थी।

श्री राजेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर का निधन 25 दिसम्बर 15 को हो गया है। आप स्व. श्री पन्नालालजी के छोटे सुपुत्र थे।

* श्री कोमलचंदजी जैन (समाज अध्यक्ष), प्रकाशचंद, कैलाशचंद, निर्मलकुमार, रवीन्द्रकुमार की माताजी **श्रीमती कस्तूरीबाई** धर्मपत्नी स्व. श्री ब्रजलालजी जैन चांदामेटा का निधन इन्दौर में 26 दिसम्बर को 92 वर्ष की दीर्घायु में हो गया। आप धर्मनिष्ठ एवं सरल स्वभावी महिला थी। आपकी स्मृति में परिजनों ने समाज न्यास को 5100/– की राशि प्रदान की।

* **श्री प्रकाशचंद जैन** (डंगराने वालों) का निधन इन्दौर में 26 दिसम्बर को हो गया है। शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त पश्चात आपने न्यास कार्यकारिणी में अस्थायी ट्रस्टी के रुप में वर्ष 2002 से 2008 तक सेवाए दी। आपकी स्मृति में परिजनों ने समाज न्यास को 5100/– की राशि प्रदान की।

* **श्रीमती हेमलता अरविन्द जैन, इन्दौर** का निधन 1 जनवरी को हो गया है। आप धार्मिक एवं सरल स्वभावी महिला थी।

श्री धर्मेन्द्रकुमार जैन का निधन अल्पायु में 20 जनवरी को करैरा में हो गया है। आप सिद्धक्षेत्र पवाजी के अनन्य भक्त एवं सच्चे श्रावक थे।

* **श्री बाबूलालजी जैन (छितरीवाले) इन्दौर** का निधन 14 जनवरी को हो गया है। आप सरल स्वभावी व्यक्ति थे।

* श्री सुधीर जैन, जितेन्द्र जैन के पिताजी **श्री सुरेन्द्रकुमार जैन** का निधन 23 जनवरी को सनावद में हो गया। आप धर्मप्रेमी, मृदुभाषी एवं सरल स्वभावी व्यक्तित्व के धनी थे। आपकी स्मृति में परिजनों ने नगर व आस पास के तीर्थक्षेत्रों के साथ गोलालारीय दर्शन को 2100/– की राशि प्रदान की।

* श्री मनीष जैन की पुत्री **कु. तिथी जैन** का निधन 7 वर्ष की आयु में 26 जनवरी को इन्दौर में हो गया। आप स्व. श्री शिखरचंदजी दिवाकीर्ति की सुपौत्री थी। आपकी स्मृति में परिजनों ने समाज न्यास को 1100/– की राशि प्रदान की।

* डॉ. मुकेश, प्रवीण एवं राजेश जैन की माताजी **श्रीमती कमलाबाई** धर्मपत्नी स्व. प्रो. बाबूलालजी जैन का निधन 84 वर्ष की दीर्घायु में 13 फरवरी को उज्जैन में हो गया। आप सरल, स्वभावी महिला थी।

* श्री वीरेन्द्रकुमार की माताजी **श्रीमती सोनाबाई** स्व. श्री हरिशचंद जैन का निधन भोपाल में 22 फरवरी को हो गया है। आप धार्मिक एवं मृदुभाषी महिला थी। आपकी स्मृति में परिजनों ने इन्दौर समाज न्यास को 1001/– की राशि प्रदान की।

दिवंगत समाजजनों को गोलालारीय दर्शन परिवार अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

नोट – शोक संदेश पूर्ण जानकारी (सचित्र) के साथ भेजने पर ही प्रकाशन संभव हो पायेगा। संदेश वाट्सएप्प पर ना भेजें।– संपादक मंडल